"Mann ki Baat: A Social Revolution on Radio" और "Marching with a Billion: Analysing Narendra Modi"s Govt. at Mid Term" दो पुस्तकों के विमोचन अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. माननीय प्रधानमंत्री जी के अति लोकप्रिय रेडियो संबोधन ''मन की बात'' के संकलन के रूप में प्रकाशित पुस्तक "Mann ki Baat: A Social Revolution on Radio" और इंडिया टुडे के उप सम्पादक श्री उदय माहुरकर द्वारा लिखित पुस्तक "Marching with a Billion: Analysing Narendra Modi"s Govt. at Mid Term" के विमोचन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में आप सभी के बीच उपस्थित होकर मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है।

2. दोनों किताब अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। There is a common link between two- we have Democracy – Republic प्रजातंत्र – हमारे Constitution की शुरूआत ही We, the people of India – 'हम भारत के लोग' से होती है। जब बात सरकार की होती है – पॉलिसी की होती है – योजना की होती है तो कहने के लिए तो वह देश के लिए जनता के लिए, मगर जनता का involvement नहीं – We, the people – हम गायब – मुझे लगता है कि इस देश को पहला ऐसा प्रधानमंत्री मिला जिसने इस 'हम' को अपनी बातों में, विकास की नीति, नियम, कार्य सबमें शामिल किया। ''सबका साथ सबका विकास'' और अब आई ''मन की बात, मेरी तुम्हारी नहीं, हम सबकी''। कोई भी व्यक्ति अपने मन की बात उसी से करता है, जो उसके निकट होता है, उसका प्रिय होता है, जिस पर उसे विश्वास होता है और जिससे संवाद स्थापित करने में उसे समान अनुभूति होती है, अपनत्व का भाव होता है। अतः, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि प्रधानमंत्री जी ने जनता से संवाद स्थापित करने के लिए 'मन की बात' को माध्यम चुना।

3. सफल जननायक एवं मार्गदर्शक अच्छे communicator भी होते हैं। वे न केवल आम जनता की भावना, अपेक्षाओं एवं आकांक्षाओं को समझते हैं, बल्कि अपनी भावना, अपने विचार व योजनाओं को जनता तक पहुंचाने एवं समझाने में भी सफल होते हैं। यानि Two Way Dialogue – परिसंवाद – बातचीत।

4. आज के सोशल मीडिया की सक्रियता वाले युग में प्रधानमंत्री जी ने रेडियो जैसे परम्परागत माध्यम को संवाद के लिए चुना। इस अवसर पर मुझे याद आई नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की। वे

कहते थे– ''मैं सुभाष बोल रहा हूं.....''। लोग उन्हें कानों में प्राण लाकर सुनते थे। ''मन की बात'' में विषय भी समयोचित होते हैं, जैसे स्वच्छता अभियान, Selfie with daughters, दिव्यांगों के हित, भ्रष्टाचारमुक्त समाज, जल संरक्षण एवं संवर्धन, नशे की लत से बचाव, अन्न को व्यर्थ न जाने देना, गैस सब्सिडी छोड़ना जैसे आम आदमी के मुद्दे। ''मन की बात'' के उस एपिसोड को सुनकर अनेक लोग भावविभोर हो गए, जब मोदी जी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि 'प्रतिस्पर्द्धा नहीं **अनुस्पर्द्धा** करो'। यह वास्तव में मनन–चिंतन करने योग्य हैं। मुझे कई लोगों ने पिछले महीनों में बताया है कि रेडियो पर जब मन की बात प्रसारित होती है तो वे अपने बच्चों को जरूर सुनवाते हैं। मैं यह भी कहना चाहूंगी कि कभी–कभी बच्चे अपने माता–पिता की बातों को गंभीरता से नहीं लेते हैं, परंतु जब देश के प्रधानमंत्री उनसे सीधे संवाद करते हैं तो वे उनकी बातों के अनुपालन को गंभीरता से लेते हैं और युवा वर्ग पर उनकी कही बातों का सशक्त प्रभाव होता है।

5. **''मन की बात''** सच में जन–जन की बात है। यह सामाजिक, सांस्कृतिक और हमारे जीवन मूल्यों को सुदृढ़ करती है। इसकी सुन्दरता यह है कि इसमें राजनीति की कोई झलक नहीं है, विशुद्ध रूप से एक विचार एवं संवाद मंच है। परीक्षा के पहले विद्यार्थियों से चर्चा, ऐसे मुद्दे वास्तव में बहुत सार्थक सिद्ध हो रहे हैं। **''मन की बात'' के मूल में जनजागृति, जनभागीदारी एवं जनकल्याण की भावना निहित है। प्रधानमंत्री जी जनभागीदारी से विकास को जन–आंदोलन का रूप दे रहे हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य 125 करोड़ से ज्यादा भारतवासियों की सामूहिक चेतना को जागृत कर उनके अंदर की असीमित ऊर्जा को सुप्रवाहित कर उन्हें राष्ट्रनिर्माण के लिए प्रेरित करना है।**

जापानी प्रधानमंत्री शिन्जो अबे ने कहा– I found P.M. Modi comes next to nobody in caring for the development of his own country from a strategic of long term perspective-

दूसरी किताब

6. इंडिया टुडे के उपसम्पादक उदय माहुरकर जी को सामयिक एवं प्रासंगिक पुस्तक लिखने के लिए बहुत–बहुत बधाई। यह पुस्तक इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि यह हमारे अत्यन्त लोकप्रिय प्रधानमंत्री की कार्यशैली से परिचय कराती है कि किस तरह एक ईमानदार, मेहनती, साहसी एवं निर्णायक कार्यकारी प्रमुख एवं जन नायक ने प्रशासन तंत्र, राजनीतिक व्यवस्था एवं अर्थव्यवस्था में क्रान्तिकारी रूपान्तरण लाकर देश के विकास को नई दिशा एवं आयाम देने का प्रयास किया है। यह पुस्तक अत्यन्त रोचक तरीके से लिखी गई है जिसमें यह बताया गया है कि प्रधानमंत्री जी कैसे योजनाबद्ध तरीके से किसी कार्यक्रम की रूप–रेखा तैयार करते हैं और उसके बाद उतनी ही सजगता और तल्लीनता से उसके Implementation और monitoring करते हैं ताकि वांछित परिणाम हासिल हो सके।

7. इस किताब में आठ अध्याय में सरकार के इन तीन वर्षों को समेटने की कोशिश की गई है। ''सबका साथ सबका विकास'' के मंत्र पर कैसे यह सरकार सभी को साथ लेकर चल रही है, सभी के लिए योजनाएं बना रही है और उनसे कैसे सभी को लाभ हो रहा है, यह इस किताब में विस्तार में समझाया गया है।

8. लोकतंत्र की मजबूती के लिए जनशक्ति का एकजुट होना, जनशक्ति पर भरोसा करना बहुत आवश्यक है। ये तीन वर्ष जनशक्ति के संगठित होने के प्रतीक हैं। ये तीन वर्ष इस बात के भी प्रतीक हैं कि कैसे जनशक्ति को जोड़कर ही देश का विकास किया जा सकता है। Good Governance और सफल प्रजातंत्र के लिए कहा गया है कि It is necessary that level of national consciousness of common citizen must be raised.

9. किस तरह आर्थिक लालच देकर नहीं बल्कि सामान्य व्यक्ति में उसके सामर्थ्य को जगाकर, उसे आगे बढ़ने का अवसर देकर उसे सशक्त किया जा रहा है। इस पर विस्तार से बात की गई है। आर्थिक नीतियों का यह एक ऐसा मॉडल है, जिस पर चलने से पहले की सरकारें कतराती रही हैं। पिछले तीन वर्षों में इस सरकार ने कैसे तकनीक का इस्तेमाल करते हुए गरीबों का फायदा पहुंचाया है, भ्रष्टाचार को कम किया है, इस बारे में भी बहुत ही सटीक जानकारियां इस किताब में हैं। एक तरह से देखें तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में Digital-Techno-Revolution हुआ है। सरकार देश में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर खड़ा करने का अभियान चला रही है।

10. प्रधानमंत्री जी बिना राजनीतिक लाभ–हानि की चिन्ता किए देश हित में कड़ा–से–कड़ा कदम उठाने का साहस रखते हैं। **मोदी जी ऐसे पहले प्रधानमंत्री हैं जो दिल्ली के लुटियन जोन्स के लुभावने सपनों में खो नहीं गए हैं। प्रधानमंत्री ने सुव्यवस्थित तरीके से देश की जनता में राष्ट्रीय गौरव जागृत करने की आंतरिक ललक पैदा की है ताकि सबको साथ लेकर राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।** तुलसी दास जी ने कहा है और मैं उसे उद्धृत करती हूं:–

''मुखिया मुखु सो चाहिऐ खान पान कहुँ एक।

पालइ पोषइ सकल अंग तुलसी सहित बिबेक।।''

(अर्थः मुखिया मुख के समान होना चाहिए जो खाने–पीने को तो अकेला है, लेकिन विवेकपूर्वक सब अंगों का पालन–पोषण करता है।)

11. इस किताब में सरकार की योजनाओं एवं उसकी नीतियों की बहुत ही संतुलित समीक्षा की गई है। लेखक को जहां कुछ गलत होते दिखा, उस पर भी उन्होंने अपनी राय रखी है। ये किताब जनता और सरकार के बीच संवाद की एक कड़ी की तरह है। सरकार की नीतियां, उसके काम जनता तक पहुंचे और जनता की राय और उसकी भावना सरकार तक पहुंचे, दोनों का संवाद लोकतंत्र की मजबूती के लिए आवश्यक है।

12. In my conservations with business leaders, politicians, academics and young people from around the world, Indians everywhere feel deeply engaged, energized and empowered to participate in Prime Minister Modi's new vision for India. With such a decisive and strong leader, there is a great opportunity for Indians to participate in not only reforming, but also transforming India-responsively and responsibly.

Klaus Schawb
Founder and Executive Chairman,
World Economic Forum

————